गंदा चूहा मूच



मार्जोरी वेनमैन शरमत

चित्र: बेन शेक्टर

गंदा चूहा मूच

मार्जोरी वेनमैन शरमत

चित्र: बेन शेक्टर





मूच चूहा बोस्टन,
मैसाचुसेट्स की एक
पहाड़ी के नीचे एक
बिल में रहता था.

मूच ने कहा, "एक गड्ढे में रहने से
बेहतर कुछ भी नहीं है.
एक पहाड़ी के नीच
पनीर के एक टुकड़े के साथ
कुछ पेय और चारों ओर
अपनी चीज़ों के साथ.”

मूच ने अपने कपड़ों को दरवाज़े के हैंडल, लैंप, तस्वीरों और कुर्सियों से लटकाए.

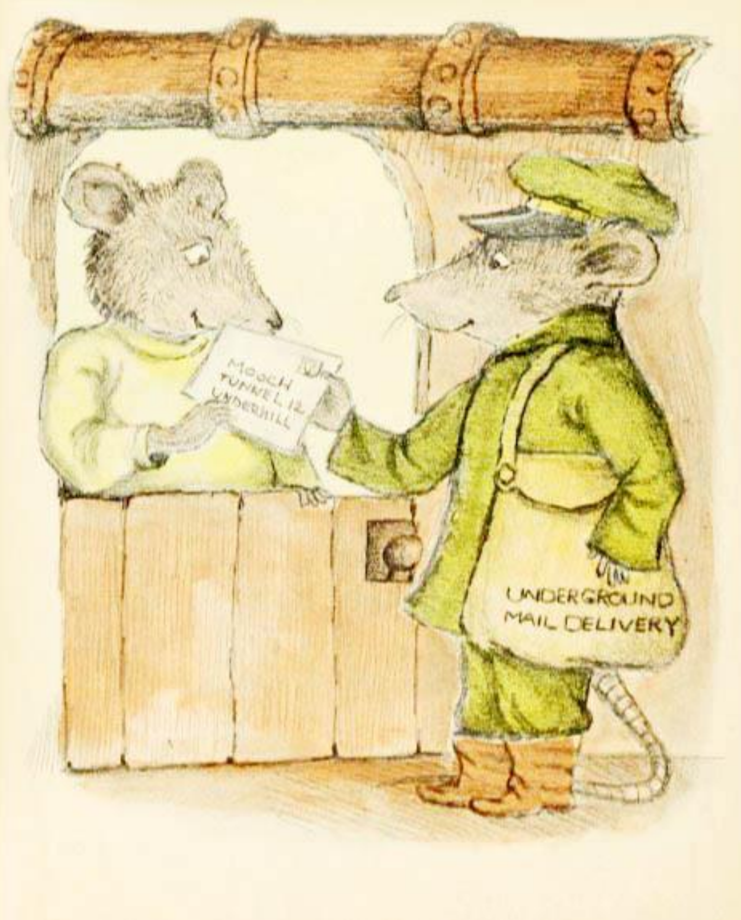
उसने अपने जूते मेज़ पर रखे.



"घर के लिए यह एक कितना बढ़िया बिल है," मूच हमेशा कहता था.

एक दिन,

मूच को एक पत्र मिला.



प्रिय बेटे मूच, मैं चार दिनों में तुमसे मिलने आ रहा हूं.

मैं तुम्हें और तुम्हारे बिल वाले घर को देखने के लिए उत्सुक हूं.

प्यार,

तुम्हारा पिता



"हुर्रे!" मूच चिल्लाया.

"मैं पिताजी के आने का
इंतज़ार नहीं कर सकता."

मूच ने दिन गिनने के लिए अपने पलंग
के खंबों पर हर दिन एक-एक मोजा
रखा.

आखिरी दिन, सभी खम्बों पर मोज़े थे.





आखिरकार,

मूच ने अपने पिता को देखा

वो पहाड़ी के ऊपर आ रहे थे.

"पिताजी!" मूच चिल्लाया.

"मूच!" पिताजी ने कहा.

उन्होंने अपने बेटे को गले लगाया और चूमा.

मूच ने कहा, "मेरे बिल में चलें."

उसके पिता ने चारों ओर देखा.

उन्होंने दरवाज़े के हैंडल से कपड़े लटके देखे,

लैंप पर कपड़े,

चित्रों पर कपड़े,

और पलंग के सभी चार खंबों पर मोज़े.

"मूच," उन्होंने कहा, "तुमने अपने बिल को बहुत गंदा रखा है."

मूच ने कहा, "मुझे अपनी सभी चीज़ों को एक-साथ देखना पसंद है."

मूच के पिता ने अपना सूटकेस खोला.

"आएं," मूच ने कहा,

"मुझे आपको दिखाने के लिए यहाँ बहुत कुछ है."



"यहाँ मेरी पसंदीदा सुरंग है.
आप उन दीवारों को खरोंचें.
उस कीचड़ को कुरेदें."



"मैं खरोंच रहा हूं,
मैं कुरेद रहा हूं,"
मूच के पिता ने कहा.

मूच आगे दौड़ा.

"यह मेरे लेटने की जगह है,"
मूच ने कहा.

"आप यहाँ लेटें पिताजी.
अपनी पीठ सीधी करें और आराम करें."

"मैं वो तीनों काम करूंगा,"
मूच के पिता ने कहा.

"बोस्टन बहुत अच्छा शहर है.
खासकर ज़मीन के नीचे रहने के लिए."

"हाँ," मूच ने कहा, "यहाँ खरोंचने
और कुरेदने के लिए बहुत कुछ है."

"अच्छा अब यात्रा समाप्त हुई," उसके पिता ने कहा जब वे मूच के बिल पर वापस आये.

मूंछ के पिता ने चारों ओर देखा.

"अगर तुम चाहो तो एक कोट, एक जूता या एक शर्ट उठाकर रख सकते हो?" उन्होंने कहा.





"हां एक चीज़," मूच ने कहा.

"लेकिन आप उसे चुनेंगे."

मूच के पिता ने कहा, "मैं एक जूता चुनूँगा."

"वो, जो दरवाज़े के बीच में है."

मूच ने जूता उठाया और उसे मेज पर
रख दिया.

"क्या मैं यह तय कर सकता हूँ कि वो
जूता कहाँ जाएगा?" मूच के पिता से पूछा.

"हाँ," मूच ने कहा.

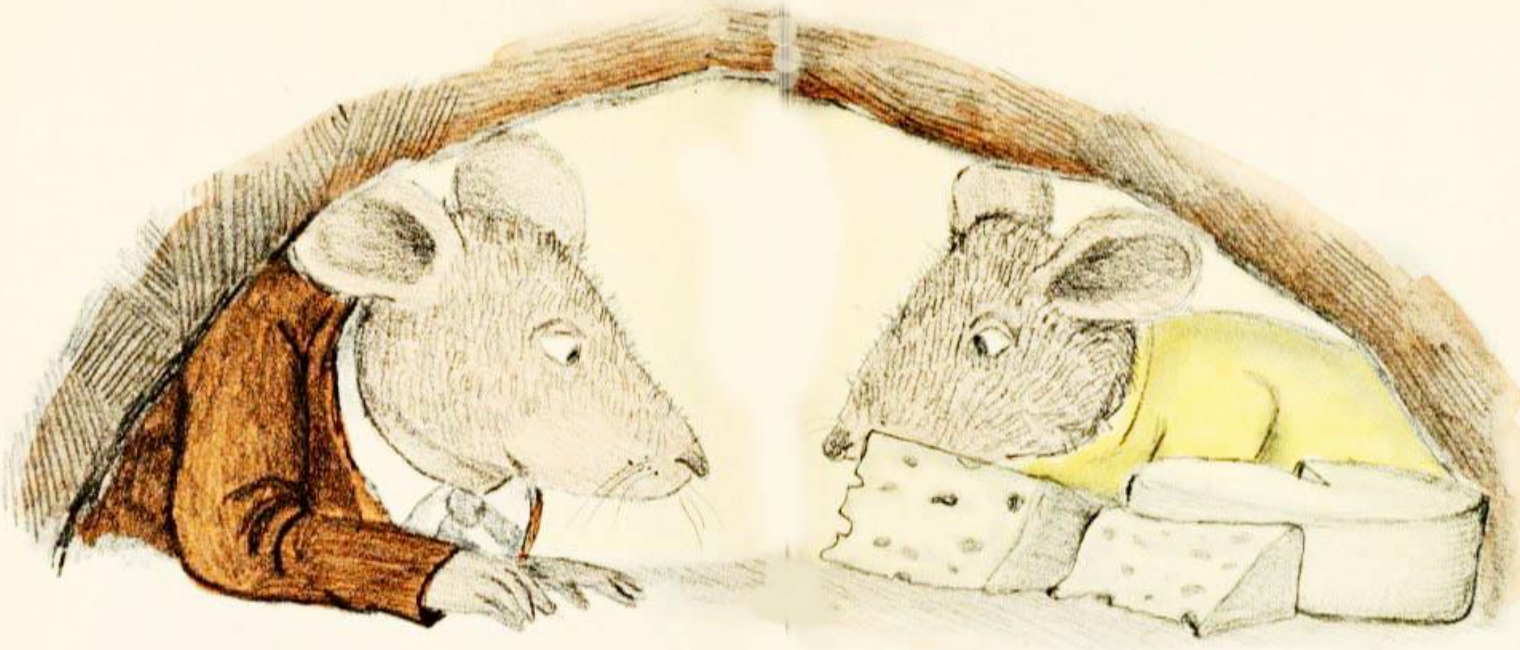
मूच के पिता ने कहा,
"मैं उसे कोठरी में रखूंगा."

मूच ने कहा, ‘’फिर मैं दोनों जूते पहनूँगा.''

"इससे आप ख़ुश होंगे."

"तुम एक अच्छे लड़के हो. तुम एक
अच्छे चूहे हो," उसके पिताजी ने कहा.





"अब आयें और मेरी पनीर वाली
सुरंग को देखें," मूच ने कहा. "सूंघें!"

"मैं सूँघ रहा हूँ!" उसके पिताजी ने
कहा. "वाह!"

"मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप
यहाँ पर आए हैं,"

मूच ने कहा, "अब हम साथ-
साथ दौड़ और सूँघ सकते हैं."

उस रात, जब उसके पिता सो रहे थे.

मूच ने पिता की यात्रा को उत्तम बनाने की बात सोची.

"उसकी शुरुआत मैं अपने बिस्तर से कर सकता हूं," उसने कहा.

मूच ने अपने बिस्तर से कचरा, मोज़े और पनीर के रैपर उठाए.

“जब पापा उठेंगे तो वो देखेंगे कि मैं कितने साफ़-सुथरे बिस्तर पर सोता हूँ."



"अरे देखो अब बिस्तर कितना चिकना और साफ लग रहा है," मूच ने कहा.

"कितना साफ-सुथरा. कितना बरबाद!"

मूच अपनी चादर और कम्बल को धक्का देकर खींचना चाहता था.

वो उनके ढेर बना के छोटे-छोटे पहाड़ बनाना चाहता था.

लेकिन मूच ने वैसा नहीं किया.

अगली सुबह, मूच के पिता ने कहा,

"तुम्हारे बिस्तर के सारे उभार गायब हो गए हैं! वो कितना अद्भुत हुआ!"



मूच ने कहा, "आज के दिन सब कुछ बहुत अच्छा होगा."

"मैं मैदान में खाने के लिए नाश्ता पैक करूंगा."

मूच ने पनीर, दलिया और दूध, घोंघे और खट्टी क्रीम, और जैम सैंडविच पैक किया.

फिर वो पिताजी के साथ मैदान की ओर भागा.





मूच ने गाया,

"मैंने एक थैली पैक की.
मैंने एक थैली पैक की."

उनके पिता ने गाया,
"तुमने थैली के अंदर क्या पैक किया?"

मूच के पिता ने जैम सैंडविच खाया.

"बाप रे!" वो चिल्लाए.
"चींटियाँ!"

"हाँ," मूच ने कहा.

"मैं अपने जैम जार को खुला छोड़ देता हूँ.

फिर चींटियाँ जैम खाती हैं और खेलती हैं

चींटियाँ चिपचिपी होकर खुश होती हैं."





"बाप रे," मूच के पिता ने फिर से कहा.

"चींटियों के बिना पिकनिक कैसी?" मूच ने पूछा.

"अचानक मुझे अपना पेट भरा हुआ महसूस हो रहा है," उसके पिता ने कहा.

मूच ने कहा, "लगता है आपको मेरी
पिकनिक पसंद नहीं आई."

वे धीरे-धीरे घर की ओर चले.

"मैं अबसे अपने जाम जार पर
हमेशा ढक्कन लगाऊंगा," मूच ने कहा.

"शायद मुझे भूख लगी है,"
उसके पिताजी ने कहा.

फिर वो खाना खाने बैठ गए.

"बाप-रे!" वो चिल्लाए. "एक जैकेट."

"माफ करें," मूच ने कहा.

उसने जैकेट दराज में रख दी.

"मैंने जैकेट कहाँ रखी है, आशा है
मुझे वो याद रहेगा," मूच ने कहा.





"क्या आपको सर्दी हो गई है?"
मूच ने पूछा.

"नहीं," उसके पिताजी ने कहा.

"धूल से मुझे अक्सर छींक आती हैं."

"जब जैकेट कुर्सी पर थी, तो मुझे ठंड
लगने पर ही उसे पहनना पड़ता था.
तब जीवन आसान था."

मूच के पिताजी ज़ोर से छींके.



मूच ने कहा, "मुझे धूल पर शब्द लिखना बहुत अच्छा लगता है."

मूच के पिता कराह उठे.

"मुझे लगता है कि मैं बिस्तर पर लेटने जाऊंगा - और लगभग एक वर्ष तक सोता रहूंगा."



"एक साल तक?" मूच ने पूछा.

"हाँ," उसके पिता ने कहा.

मूच भी रेंगते हुए बिस्तर में घुस गया.

वो काफी उदास लग रहा था.

"धूल से पिताजी को छींक आती है," मूच ने कहा.

"तो मैं यहाँ की धूल से छुटकारा पा लूँगा."

मूच रेंगते हुए बिस्तर से बाहर निकला.





"अलविदा, धूल," मूच ने कहा.

"और अगर मैं सब धूल साफ़ कर दूँ तो पिताजी को बहुत अच्छा लगेगा"

मूच ने दरवाज़ों से लटकी अपनी सभी बेल्टें उतार दीं.

उसने मेज से अपने जूते भी हटा दिए.

उसने लैंप से टंगी अपनी बनियान भी उतारी.





उसने तस्वीर से लटका अपना स्वेटर उतारा.

उसने कुर्सियों पर पड़ी ढेर सारी चादरें हटाईं.

उसके बाद उसने चादरों के ढेर पर
पड़े तौलियों के ढेर को भी हटाया.



अब मूच का बिल बहुत साफ-सुथरा और
एकदम खाली-खाली लग रहा था.

मूच ने कहा, "जब पिता जागेंगे,"
"तो वो चिल्लायेंगे.
साफ! इतना साफ!! हुर्रे!"

मूच ने चारों ओर देखा.

"यह जगह अब बहुत साफ-सुथरी
दिख रही है.
उससे मैं बहुत पागल हूँ,
मैं अपने बाल नोच सकता हूँ.
लेकिन मैं उन्हें रखूंगा कहां?"

फिर उसने अपनी आँखें ढँक लीं
और वो सो गया.

अचानक उसने अपने पिता की आवाज़ सुनी.

"उठो! मूच! उठो!

लगता है हमारे घर में
किसी ने चोरी की है!"



"किसी ने सब कुछ चुरा लिया है!
तुम्हारे जूते और चादरें और तौलिये और बेल्ट.
यहाँ के ढेर और गठरियाँ और साथ में चोर
तुम्हारे धूल भरे संदेश को भी ले गया है!"

"नहीं, पिताजी," मूच ने कहा.
"वो सब सफाई मैंने ही की है.
मैं चाहता था कि आप खुश हों और चिल्लायें.
साफ-सुथरा! साफ-सुथरा!! हुर्रे!"

"मूच!" उसके पिता ने कहा.
"अब तुम्हारा बिल साफ सुथरा है.
अब मैं यहाँ सच में घर जैसा
महसूस कर रहा हूं.
चलो, अब नाश्ता करें
और फिर हम दौड़ सकते हैं
और खरोच सकते हैं और कुरेद सकते हैं."

"मुझे खुशी है कि अब आप खुश हैं,"
मूच ने कहा.

"मुझे मेरा मूच बहुत पसंद है!"
मूच के पिता ने कहा.

"मुझे भी अपने पिताजी से प्यार है,"
मूच ने कहा.





"अब मैं कहीं गिरता नहीं,

फिसलता भी नहीं

और मैं छींकता भी नहीं हूं.

मैं तुम्हारे कपड़ों पर भी नहीं बैठता.

लेकिन अब मेरे वापिस जाने का

समय हो गया है."

मूच ने अपने पिताजी का सूटकेस

पैक करने में मदद की.

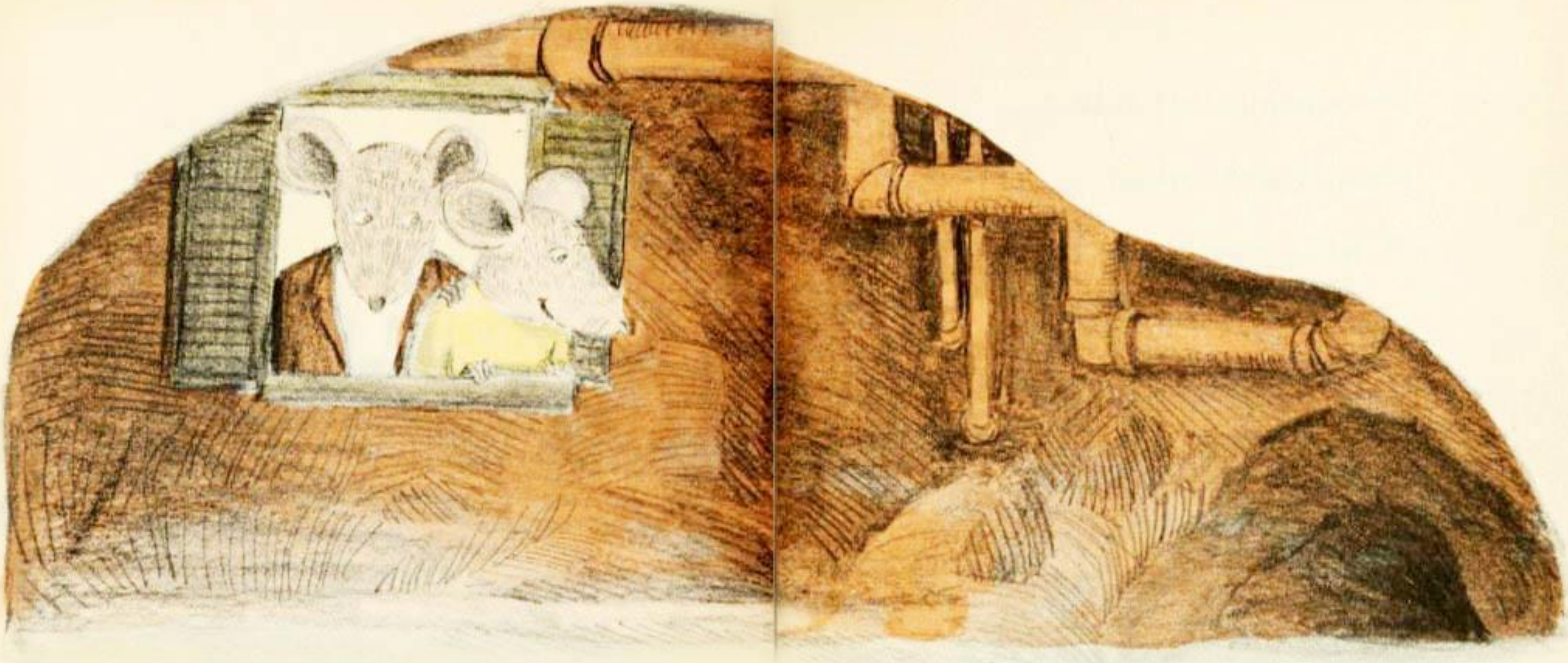
कई दिन बीत गए,

और एक दिन मूच के पिता ने कहा,

"मेरे बेटे, मैं यहाँ बहुत अच्छा समय

बिता रहा हूँ."





"मैं तुम्हारे लिए एक अलविदा उपहार लाया हूँ,"
उसके पिता ने कहा.

“वाह!!" मूच ने कहा, "एक नई सुरंग!"

"जब तुम सो रहे थे तब मैंने इस सुरंग
को खोदा था," उसके पिता ने कहा.

"ओह, अंदर अंधेरा है और गंदगी है
जो बहुत बढ़िया बात है!" मूच ने कहा.

मूच और उसके पिता ने एक दूसरे को चूमा.

"मुझे यह यात्रा हमेशा याद रहेगी," मूच के पिता ने कहा.

"मुझे उस बेटे पर गर्व है जिसके पास अपना खुद का बिल है.
और मैं इसे वैसे ही याद रखूंगा जैसा वो अब दिखता है."

"मुझे ख़ुशी है," मूच ने कहा.





मूच ने अपने पिता को अलविदा कहा.

फिर वो अपने बिल में वापस गया.

उसने चारों ओर देखा.

"साफ़!" मूच ने कहा.

"मुझे साफ़-सफ़ाई से नफ़रत है!"

फिर वो अपनी कोठरी की ओर भागा.

"हैलो, जूते," उसने कहा.

"हैलो, दूसरे जूते."





"तुम्हारा घर में स्वागत है,

मोज़े, बेल्ट, शर्ट, स्वेटर,

तौलिये, चादरें, कम्बल,

मैं तुम्हें देख सकता हूं.

मिट्टी, धूल, मिट्टी!"

मैं तुम्हें देख सकता हूं!





मूच मुस्कुराया.

"पिताजी के आने से पहले
मेरा बिल बिल्कुल ऐसा ही था."

फिर मूच ने खुद के लिए एक
कप कोको बनाया और फिर उसने
चादरों और कंबलों का एक ढेर
बनाया.

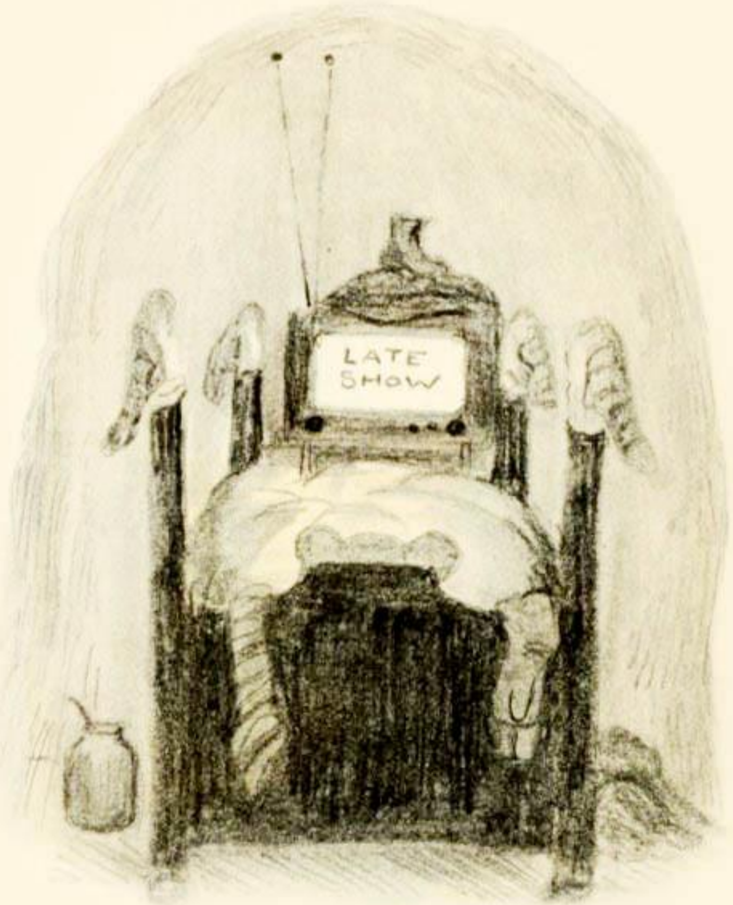


मूच खुश था.

"इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता है," उसने सोचा,

"एक चूहे के लिए बोस्टन, मैसाचुसेट्स में एक पहाड़ी के नीचे एक बिल में रहने से बेहतर और कुछ नहीं हो सकता है."




LATE
SHOW